5

गतिविधि क्षेत्रों में प्रारंभिक साक्षरता को बढ़ावा

रौमिला सोनी

भारत में 34 वर्षों पश्चात आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत (फ़ॉउडेशन लिटरेसी और न्यूमरेसी) मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षा नीति के अनुसार 2025 तक नेशनल मिशन के माध्यम से फ़ॉउंडेशन लिटरेसी और न्यूमरेसी कौशल प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

बच्चे प्री-स्कूल में अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न कौशल सीखते हैं, इसीलिए बच्चे में भाषा और शुरूआती साक्षरता का विकास भी प्री-स्कूल के शिक्षकों की ही ज़िम्मेदारी है। शिक्षक बच्चों में संप्रेषण कौशल विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसरों का प्रबंध करें जिससे, सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का विकास होता है। इस लेख में फ़ॉउडेशन लिटरेसी यानि कि प्रारंभिक साक्षरता को किस तरह से कक्षा के वातावरण में बुन सकते हैं, पर चर्चा की गई है।

इस लेख में यह बताया गया है कि किस तरह शिक्षक बच्चों को बातचीत, अभिनय, पढ़ने और लिखने की तैयारी के अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान कर सकता है। उदाहरणस्वरूप मुद्रित सामाग्री से बच्चों का परिचय कराने के लिए सबसे पहले कक्षा में मुद्रण-समृद्ध परिवेश उपलब्ध कराएँ। अक्षर चार्ट बच्चों के दृष्टि स्तर पर लगाएँ तथा स्तरवार अनुरूप कहानी की किताबें उपलब्ध कराएँ, जिससे बच्चों का रूझान प्रिंट की तरफ आकर्षित होगा। परिवेश में उपलब्ध मुद्रित सामाग्री, जैसे— बिस्कुट, टॉफी इत्यादि के रैपर आदि से शुरूआत कराएँ। बच्चों को अधिकाधिक शुरूआती पढ़ने-लिखने की तैयारी व साक्षरता के अनुभव दें, जिससे उनके लिए प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करना सुगम हो जाए और वे अपनी स्कूली यात्रा का भरपूर आनंद उठा सकें।

लेख में यह भी बताया गया है कि किस तरह से प्रारंभिक साक्षरता के विकास हेतु विद्यालय में नाटकीय खेल से साक्षरता, संगीत, गति एवं कला के माध्यम से साक्षरता संबंधित क्रियाकलाप कराए जा सकते हैं, जो न केवल बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करते हैं, बल्कि साथ ही साथ उनमें समूह में कार्य करने की क्षमता का विकास भी करते हैं। इस लेख में इस बिंदु पर भी प्रकाश डाला गया है कि स्कूल के साथ-साथ किस तरह से माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्य और समुदाय बच्चों के भाषा के सीखने में योगदान दे सकते हैं।

© NCERT not to be republished

**एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

छोटे बच्चों की भाषा और प्रारंभिक साक्षरता का विकास करना सभी प्री-स्कूल शिक्षकों की एक आवश्यक ज़िम्मेदारी है। बच्चों का किसी बात को सीखने, ग्रहण करने और अपने अनुभवों पर विचार करने का ढंग मुख्य रूप से उनके शाब्दिक प्रतीकों के सहज प्रयोग करने पर ही निर्भर करता है। छोटे समूह की गतिविधियाँ इस कार्य में आश्चर्यजनक रूप से उपयोगी होती हैं क्योंकि इनमें बच्चे भली-भाँति खुलकर बातचीत कर पाते हैं। जैसे-जैसे बच्चों के अनुभव बढ़ते हैं, भाषा उनके लिए अर्थपूर्ण होती जाती है और उनका आगे बढ़ना और सीखना संभव होता जाता है।

संप्रत्यय निर्माण और विद्यालयी कार्यों के लिए भाषा कौशल बहुत महत्वपूर्ण है। साक्षरता विकास से तात्पर्य संपर्क या संप्रेषण कौशलों का विकास है जिसमें सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल शामिल हैं। संप्रेषण कौशल का अधिकतम विकास रुचिकर गतिविधि के माध्यम से ही होता है। अत: छोटे बच्चों को भाषा प्रयोग के अधिक से अधिक अवसर दिए जाने चाहिए। हमें प्री-स्कूल में एक ऐसे भाषा समृद्ध परिवेश का निर्माण करने की आवश्यकता है जिसमें बच्चे जब संभव हो वह सब अनुभव कर सकें, जो वे सीख रहे हैं। यद्यपि ये छोटे बच्चे अभी पढ़ नहीं सकते, लेकिन परिवेश में ग्राफ़िक चित्र या मुद्रित सामग्री को देखकर उन्हें सुनी-कही बातों तथा भाषा के लिखित प्रतीक चिह्नों में संबंध बैठाने में सहायता मिलती है। बच्चों को बात करने, नाटक करने, पढ़ने और लिखने के अधिक-से-अधिक अवसर दिए जाने की आवश्कता है।

साक्षरता विकास में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में साक्षरता विकास के अधिकाधिक अवसर मिलने चाहिए। संगीत, ब्लॉक्स, खिलौने, कला, नाटक और जोड़-तोड़ के खेल और हस्तकौशल जैसी रुचिकर गतिविधियों के द्वारा साक्षरता कौशल विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। भाषा सीखना, कक्षा परिवेश और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) कार्यक्रम के सभी पक्षों का अभिन्न अंग होना चाहिए। प्री-स्कूल शिक्षक को देखना चाहिए कि कक्षा में बात करने, सुनने, लिखने (पूर्व लेखन गतिविधियाँ) और पढ़ने (पूर्व पठन) की तैयारी की गतिविधियाँ अधिक से अधिक हों। इसमें कविता, गीत, गाना, कहानी सुनना व कहना आदि शामिल हैं। लेकिन कक्षा में दिए गए यह सभी अनुभव अर्थपूर्ण होने चाहिए। इन्हें कक्षा की गतिविधियों के साथ जोड़ा जा सकता है।

यदि आपकी कक्षा में गतिविधि (activity areas) क्षेत्र बनाने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है तो आप किसी दूसरे कमरे में गतिविधि क्षेत्र बना सकते हैं और उसे गतिविधि संसाधन केंद्र के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

नाटकीय खेलों द्वारा साक्षरता

खिलौना टेलीफ़ोन, भोजन के खाली डिब्बे या रैपर्स, आदि वस्तुएँ लिखित शब्दों और वस्तुओं के बीच एक संबंध जोड़ने में बच्चों की मदद करती हैं। नाटक में जब सामग्रियों-नोटबुक, खिलौना टेलीफ़ोन, पेंसिल, बच्चों के नामों की डाइरेक्टरी, विभिन्न वेशभूषा

© NCERT not to be republished

वाली गुड़ियों, उनके कपड़े, बड़ी गुड़ियाँ, बर्तन और अन्य सामान को एक साथ व्यवस्थित ढंग से रखते हैं तो बच्चे बड़े ध्यान से इनका अवलोकन करते हैं। वे समानताओं और विभिन्नताओं को पहचान पाते हैं। पठन में अक्षरों और शब्दों को पहचानने में इससे बड़ी सहायता मिलती है।

नाटकीय खेल या ड्रामा अकसर संयुक्त योजना और सहयोग से ही होते हैं। उदाहरण के लिए— 'आओ नाटक करें कि मैं तुम्हारी माँ हूँ और तुम मेरे बच्चे' 'आओ बाज़ार-बाज़ार खेलें' 'हम शॉपिंग करने जाएँगे' 'तुम सब सब्ज़ी बेचने वाला' 'फल बेचने वाला बन जाना' 'मैं, बॉबी और मॉली खरीदारी करेंगे' हिमांक पापा बन जाएगा।' इससे बच्चे दूसरों के साथ मिलकर खेलना और सौदा करना सीखते हैं और बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।

संगीत और गति के द्वारा साक्षरता

प्रारंभिक बाल्यावस्था कक्षाओं में संगीत का होना बहुत आवश्यक है। संगीत भाषा विकास को आगे बढ़ाने में मदद करता है। संगीत से बच्चों को आंनद की प्राप्ति होती है जिससे वे रचनात्मक रूप से स्वयं को अभिव्यक्त कर पाते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से लय व तुक के माध्यम से शब्दों के खेल खेलते हैं। संगीत और गति (music and movement) को प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम में शामिल करने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि बच्चे संगीत के माध्यम से स्वयं को खुलकर अभिव्यक्त करते हैं। यह अच्छा रहेगा यदि 'संगीत' को अन्य क्षेत्रों से अलग बनाया जाए ताकि बच्चे मुक्त रूप से अपनी मनोदशा और भावनाओं के अनुकूल ताल पर शरीर को रचनात्मक रूप हिला-डुला सकें। संगीत द्वारा बच्चों की स्मरण शक्ति, ध्यान देने की अवधि, श्रवण कौशल और ध्वनि विभेदीकरण के कौशलों का विकास होता है। गाना गाने और कविताएँ सुनने-सुनाने से बच्चों की भाषा और अन्य महत्वपूर्ण अवधारणाएँ विकसित होती हैं। बच्चे जब नए-नए गीत और कविताएँ सुनते और गाते हैं तो नए शब्द सीखते हैं, उनके शब्द-भंडार में वृद्धि होती है।

नाटकीय खेल के लिए सामग्री

- लंबा बड़ा आइना
- पुराने आभूषण
- कहानी पुस्तकें
- जूते के डिब्बे
- ड्रम्स
- काले चश्मे (धूप के)
- टोप
- टाई
- कमीज़ें
- संगीत के यंत्र
- एक पुराना स्टीयरिंग व्हील
- चॉक
- खिलौना टेलीफ़ोन
- गुड़िया
- भरे हुए खिलौने (स्टफ्ड सॉफ़्ट टॉयज़)

शिशु-गीत गाने और कविताओं के लिए आवश्यक सामग्री है— चित्र सहित कविताओं के चार्ट, कविताओं के कार्ड और चित्रों वाली गीत पुस्तक।

बच्चों को अपने तरीके से संगीत और गति का आनंद लेने दें। उन्हें भाषायी और प्रारंभिक साक्षरता कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

भाषा की ध्वनियों पर बच्चों का ध्यान केंद्रित करने में सहायता करने के लिए आप साधारण खेलों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप बच्चों को उनके साथियों के नाम ताली की लय पर बोलने

© NCERT not to be republished

के लिए कहें। बच्चे तुक व लय पर नाचते हुए उन्हें दोहराएँ।

- आप एक गीत या कविता गाकर रुक जाएँ, बच्चे उसकी अंतिम पंक्ति गाएँ।
- आप कोई परिचित धुन पूछ सकते हैं— "यह कौन-सी कविता या गीत है?"
- आपके नाम की पहली ध्वनि क्या है? ठीक बताया—'प'। गीत चार्ट पर 'प' कहाँ है? आप और कितने 'प' अक्षर चार्ट पर ढूँढ सकते हैं?
- गति का अभ्यास कराने के लिए आप बच्चों से पूछ सकते हैं— "मैं संगीत बजाता हूँ, सुनिए। यदि संगीत की आवाज़ धीमी है तो कछुए की तरह धीरे-धीरे चलो और जब मैं संगीत की धुन तेज़ कर दूँ तो खरगोश की तरह उछल-उछल कर चलो। चलो, अब संगीत की धुन पर गति करो।"'
- गाने में 'ब' ध्वनि सुनाई देने पर ताली बजाओ।
- संगीत सुनो और अपना रुमाल को वृत्त के आकार में गोल-गोल घुमाओ।
- नदी के पार जाने या कमरे के उस तरफ़ जाने का रास्ता सुझाओ। (इस तरह से बच्चे भाषा विकास के साथ-साथ सृजनात्मक चिंतन भी करेंगे और छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाना भी सीखेंगे।
- यदि संगीत की अलग से गतिविधि क्षेत्र बनाना संभव न हो पाए तो कक्षा की विभिन्न गतिविधियों को भी संगीत से जोड़ा जा सकता है। आप कुछ परिवर्तित, सस्ते और आसानी से बनने वाले संगीत वाद्य बनाएँ और हर बच्चे को उनका इस्तेमाल करने दें। गीत गाते या कहानी सुनाते समय इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग करें। जब आप कहानी दोहराएँ तो इन वाद्य यंत्रों से बच्चों को ध्वनि प्रभाव पैदा करने के लिए प्रेरित करें।
- ताली बजाकर ताली के पैटर्न की नकल करने के लिए बच्चों से कहें और पूछें कि क्या वे तालियों के साथ बनते पैटर्न की नकल कर सकते हैं?, जैसे— एक ताली-दो-ताली, एक ताली-दो ताली।
- आप उन्हें नए-नए शब्दों से गीत बनाने को कहें।
- ध्यान दें कि गति करते समय बच्चे आपके निर्देशों का पालन करें, जैसे कि कल्पना करो आप हाथी हो और जंगल में जा रहे हो अथवा एक तितली एक फूल से दूसरे फूल पर जा रही है।
- ताल पर गति करते समय बच्चों को निम्न गीत ध्यान से सुनने के लिए कहिए और वैसी ही रचनात्मक गीत गाने के लिए कहें।

इसी तरह से आप विषय पर आधारित गीत या कविता बनाएँ।

लाल, हरा, पीला-पीला
लाल बताओ क्या बच्चों
लाल बताओ क्या?
लाल-लाल टमाटर
लाल-लाल सेब

(इसी तरह से अन्य रंगों के नाम लेते हुए उनसे संबंधित वस्तुओं को जोड़ते हुए आगे गीत गाएँ।)

कला क्षेत्र के माध्यम से साक्षरता

कला की गतिविधियों से बच्चों को खुशी, उत्सकुता और संतुष्टि मिलती है। साथ ही उन्हें सुनने, बोलने और अपने विचार अभिव्यक्त करने का भी अवसर

© NCERT not to be republished

मिलता है। बच्चे कला के लिए निर्धारित कला क्षेत्र में पूरी तरह मग्न हो जाते हैं। कला की गतिविधियों में बच्चे जब निर्देश सुनते हैं, एक-दूसरे से बात करते हैं, अपनी कोशिशों और अपनी बनाई गई चीज़ों के बारे में बताते हैं, तो उन्हें भाषायी और संवाद कौशलों को विकसित करने का अवसर मिलता है।

कला क्षेत्र के लिए सामग्री	
• वर्णमाला स्टैंप पैड • चॉक बोर्ड • रंगीन स्केच पेन • मैंगज़ीन • सफ़ेद कागज़ • मोमी रंग • वर्णमाला स्पांज • रंग और ब्रुश	• प्रिंटिंग के गैजेट • ईज़ल बोर्ड • मॉडलिंग के लिए छोटा बोर्ड • रंगीन कागज़ • पुस्तकें, जैसे— *रूपा हाथी*, *लालू और पीलू*, *द हंगरी कैटरपिलर* आदि।

सृजनात्मक कला क्षेत्र प्रारंभिक बाल्यावस्था पाठ्यक्रम का अहम हिस्सा है। कला गतिविधियों के लिए एक स्थान निर्धारित करें और उसमें भाषा से संबंधित सामग्री रखिए ताकि बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार से वस्तुओं को छूने और उन पर लगे लेबल (print) व चित्रों को देखने का अवसर मिले। इससे छोटे बच्चों में दृश्य पठन और पूर्व-पठन कौशलों को सुदढ़ करने का प्रोत्साहन मिलता है। आप प्रिंट करने के लिए अक्षर वाले स्टैंप पैड भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे बच्चों की अक्षरों को जानने की जिज्ञासा बढ़ती है और वे उन्हें डिब्बों पर लिखे अक्षरों से मिलाते हैं। कागज़ पर ब्रश चलाने, स्टैंप पैड इस्तेमाल करने, मिट्टी को गूँधने और आकार देने से उनके हाथ की छोटी माँसपेशियों पर नियंत्रण बढ़ता है। इससे लिखने के लिए आवश्यक उनके सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों (fine motor skills) का विकास होता है इसीलिए बच्चों की सृजनात्मक कार्य प्रक्रिया को प्रोत्साहित करें। बच्चे के द्वारा कार्यों के बारे में प्रतिक्रिया करने के लिए सही समय का इंतज़ार करें। उदाहरण के लिए, जब बच्चे कोई चित्र बना रहे हों तब आप कह सकते हैं— 'वाह! देखो लाल और पीला रंग मिलाने से क्या रंग बन गया। नारंगी रंग।' इससे बच्चे अवलोकन तथा अन्वेषण करना खेल-खेल में ही सीख जाएँगे।

- आपने अपने कागज़ पर कितने सारे गोले बनाए हैं। आपको गोले और कहाँ-कहाँ दिख रहे है? एक अक्षर इस तरह के गोले जैसा भी दिखता है। अब बताओ इस तरह के गोले जैसा अक्षर कौन सा है?
- बच्चे जब अक्षर स्टैंप पैड का प्रयोग कर रहे हों, तब उदाहरणस्वरूप आप कह सकते हैं कि सभी 'क' को लाल रंग में प्रिंट करो।
- माता-पिता या दादा-दादी के लिए कार्ड बनाते समय उन्हें उनके नाम का पहला अक्षर प्रिंट करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बीना नाम 'ब' से शुरू होता है तो कार्ड पर 'ब' अक्षर ढूँढ़ कर प्रिंट करो।
- आपने क्या बनाया है? अपने चित्र के बारे में बताओ। क्या मैं आपके चित्र के बारे में एक कहानी बनाऊँ? फिर हम सबको सुनाएँगे।
- कोलॉज गतिविधि कराते समय बच्चे रंगीन स्ट्रा या पाइप से अक्षर बनाकर उन्हें चिपका सकते हैं।

© NCERT not to be republished

- बच्चों को मैगज़ीन में से अक्षर और शब्द ढूँढ़ने दें। उनसे उसी अक्षर को या शब्द को काटकर चिपकाने के लिए कहें।
- बच्चों से मिट्टी या क्ले (प्लास्टिसीन) को मोड़कर अक्षर बनाने को कहें।
- अपने कलात्मक कार्य पर अपना नाम लिखने के लिए प्रेरित करें। शुरू में बच्चे जैसा चाहे लिखें। बाद में उन्हें अपना नाम कार्ड में से देख कर लिखने का प्रयत्न करने को कहें।
- आपसी बातचीत को बढ़ावा देने के लिए बच्चों के कार्य को उनके दृष्टि स्तर पर ही प्रदर्शित करें।
- कठपुतलियों और मुखौटों का इस्तेमाल करें। इन्हें आप पुस्तकालय और कला दोनों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

जोड़-तोड़ के खेल तथा हस्तकौशल क्षेत्र द्वारा साक्षरता

मेज़ पर रखकर अकसर इस्तेमाल की जाने वाली छोटी-छोटी वस्तुओं को हस्तकौशलीय सामग्री (manipulative) कहते हैं। अपनी आँखों और हाथों का प्रयोग करते हुए बच्चे इन वस्तुओं का इस्तेमाल कुछ करने या बनाने में करते हैं, जैसे— छोटे व बड़े ब्लॉक्स, *क्यूब्स*, *पज़ल्स*, *लोटो गेम्स* आदि। बच्चे अधिकतर इनका इस्तेमाल जोड़े या समूह में न करके अकेले करते हैं। छोटे समूह में इन वस्तुओं से खेलते समय बच्चे इनके बारे में बात करते हैं और इनका वर्णन करते हैं। वे इनके रंग, आकार, आकृति की तुलना करते हैं। क्रमबद्ध चिंतन कार्ड्स, डोमिनोज़, पज़ल्स और अन्य संग्रहों को ठीक से व्यवस्थित करते समय बच्चों के पठन और लेखन कौशल विकसित होते हैं। वे समान वस्तुओं का मिलान करना, दृष्टि विभेदीकरण और बाएँ-से-दाएँ दिशाबोध जैसे कौशल सीखते हैं। कक्षा की दिनचर्या और भली-भाँति संयोजित हस्तकौशल क्षेत्र बच्चों को भाषा सीखने और गणितीय अनुभव प्राप्त करने के कई सारे अवसर प्रदान करता है। 'अक्षरों के पज़ल्स' पठन तैयारी में मदद करते हैं और 'अंकों वाले पज़ल्स' संख्या-अवधारणा विकसित करने में सहायक होते हैं। चुंबकीय अक्षरों (Magnetic letters) और अक्षर ब्लॉक्स का प्रयोग करते समय बच्चे अक्षर ढूँढ़ते और पहचानते हैं। चुंबकीय बोर्ड पर अक्षरों को घुमाते समय भी बच्चे अक्षर पहचानते हैं। 'अक्षर ब्लॉक्स' को बाएँ-से-दाएँ एक लाइन में व्यवस्थित करते समय उन्हें अपने आप बाएँ-से-दाएँ पढ़ने का बोध हो जाता है और इस तरह के खेलों में मिलान करना और पहचानना शामिल होता है। इसके लिए अवलोकन करने, मिलान करने और तुलना करने के कौशल आवश्यक होते हैं जो पढ़ने की तैयारी के लिए बहुत ज़रूरी हैं। डोमिनोज़ से भी बच्चों की अवलोकन करने, तुलना व मिलान करने की योग्यता विकसित होती है जिससे पठन की तैयारी में मदद मिलती है। डोमिनोज़ मिलान के क्रियाकलाप करने के लिए खेल व अधिगम सामग्री होती है।

आप सभी खुली अलमारियों (shelves) और भंडारण डिब्बों पर साफ़-साफ़ लेबल और चित्र लगाएँ। इससे बच्चों को वस्तुओं को पहचानकर सही डिब्बे में रखने में मदद मिलती है। नाम वाले पज़ल्स, स्मृति खेल, फ़ोटो और चित्र से नाम मिलाने वाले खेल आदि अपना नाम पहचानने में बच्चों की सहायता

करते हैं। काम करते हुए बच्चों का अवलोकन करते समय आपने देखा होगा कि बच्चे खिलौनों और खेल के डिब्बों पर मुद्रित सामग्री की ओर संकेत करते हैं और बात करते हैं। अकसर वे पूछते भी हैं कि 'यह क्या लिखा है? 'क्या यह बिस्कुट लिखा है? आदि। वे अपनी समस्याएँ सुलझाते और खेल के नियम तय करते समय भी संवाद करते हैं।

इसी प्रकार क्रमबद्ध चिंतन कार्ड्स को व्यवस्थित करते समय (जैसे केला छीलने से लेकर उसको खाने तथा छिलके को कूड़ेदान में फेंकने के चित्र कार्ड) वे उन्हें बाएँ-से-दाएँ लगाते हैं। तब आप उनसे पूछ सकते हैं कि पहले क्या हुआ? फिर क्या हुआ? परिवेश की मुद्रित सामग्री से मिलान करने तथा दृश्य और श्रव्य विभेदीकरण गतिविधियों के लिए चुंबकीय अक्षरों का प्रयोग करें। आप पूछ सकते हैं कि आपने नाम की पहली ध्वनि क्या सुनी? क्या वह अक्षर यहाँ दिख रहा है? क्या इस जैसा अक्षर आप कक्षा में ढूँढ सकते हैं? बच्चे को उसके नाम का कार्ड देकर पूछें— आपको अपना नाम लिखने के लिए कौन से अक्षर चाहिए? खेलते समय बच्चों से बातचीत द्वारा उनकी भाषा और शब्द-भंडार बढ़ाइए। उन्हें मुक्त रूप से कुछ भी अंकित या चित्रित करने, कीरम काटे करने और लिखने की छूट दीजिए। इससे मुद्रित सामग्री को जानने-पहचानने का प्रोत्साहन मिलेगा।

कक्षा पुस्तकालय क्षेत्र में साक्षरता

आप कक्षा का विभाजन करके एक छोटा कक्षा पुस्तकालय बनाएँ या गतिविधि संसाधन केंद्र में अलग से पुस्तकालय क्षेत्र भी बना सकते हैं। इस क्षेत्र में आप साक्षरता के सभी पक्षों— सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखने की तैयारी को मज़बूत बनाने के साधनों का संग्रह रख सकते हैं। इसके साथ ही बच्चों को उन्हें पढ़ने के लिए बढ़ावा दे सकते हैं। इस क्षेत्र को बहुत ही ध्यानपूर्वक संयोजित करें। यहाँ के परिवेश में वास्तविक जीवन स्थितियाँ प्रतिबिंबित होनी चाहिए। सामग्री परिचित और आकर्षक होनी चाहिए। यह जानना कि बच्चे क्या जानते हैं और उन्हें आगे कैसे बढ़ाना है, शिक्षक का काम है। पुस्तकों, चित्रकला, संगीत आदि में बच्चों की रुचियों के बारे में उनके माता-पिता से बातचीत करके जाना जा सकता है। गतिशील भाषा के इस्तेमाल की तैयारी के लिए आपको विविध प्रकार का साहित्य और साक्षरता की युक्तियाँ चुननी होंगी। जब आप साक्षरता क्षेत्र की योजना बनाते हैं और उसका संयोजन करते हैं, तब भाषा को जानने में आप बच्चों के साथी और पथ प्रदर्शक होते हैं। आप जितना बच्चों को जानेंगे, उतनी ही उनकी वृद्धि और विकास को दिशा दे सकेंगे। उदाहरण के लिए, आप पुस्तकें चुनने, पुस्तकें साझा करने के लिए, जोड़े बनाने या प्रश्नों के उत्तर देने में उनकी मदद कर सकते हैं।

हस्तकौशल क्षेत्र के लिए सामग्री

- वर्णमाला ब्लॉक्स
- वर्णमाला पज़ल्स
- चुंबकीय अक्षर
- सैंड पेपर अक्षर
- नाम के कार्ड्स
- क्रमबद्ध कार्ड्स
- लोटो खेल
- छाँटने की सामग्री
- आत्मशोधन पज़ल्स
- मिलान के खेल
- नेस्टिंग के खेल
- फ़्लैनल बोर्ड

© NCERT not to be republished

भाषा व साक्षरता क्षेत्र में लिखने के लिए एक मेज़ और किताबों की रैक (shelf) तथा एक श्रवण केंद्र होना चाहिए। लेखन चित्र में बच्चों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के अक्षर, मोमी रंग, स्केच पेन, रंगीन पेंसिलें, चॉक बोर्ड, रंगीन चॉक, लाइनों और बिना लाइनों वाले कागज़, नाम वाले कार्ड और अक्षर स्टैंप्स होने चाहिए। आपको ध्यान देना होगा कि ये उपभोज्य वस्तुएँ नियमित रूप से उपलब्ध होती रहें। इस क्षेत्र में एक दरी, कुछ गद्दियाँ और छोटी कुर्सियाँ भी होनी चाहिए। सभी पुस्तकें डिवाइडर रैक या घूमने वाली रैक पर आकर्षक ढंग से प्रदर्शित की जानी चाहिए। पुस्तकें भी अलग-अलग प्रकार की हों— कुछ चित्र पुस्तकें और कुछ चुनौतीपूर्ण। कुछ पुरानी खाली कॉपियाँ, स्क्रैप बुक भी रखी जाएँ ताकि बच्चे पुरानी मैग्ज़ीनों से काटकर बच्चे अपने मनपसंद चित्र या अक्षर काटकर चिपका सकें और अपनी स्वयं की पुस्तक बना सकें। इस प्रकार की सामग्री देने से बच्चे खुलकर काम करते हैं।

पुस्तकालय क्षेत्र खासतौर से शांत और शर्मीले बच्चों के लिए एक आदर्श स्थान है, जहाँ आप छोटे समूह में कहानी की पुस्तकें साझा कर सकते हैं। कहानी कथन को प्रभावशाली बनाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। कहानी सुनाते समय पुस्तक के कवर पृष्ठ पर लिखे शब्दों पर हमेशा बाएँ-से-दाएँ उँगली घुमाएँ। कहानी में आगे क्या होगा, पृष्ठ पलटते समय बच्चों को स्वयं अनुमान लगाने दें। शब्दों की ओर संकेत करने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे— बताओ 'कुत्ता' शब्द कहाँ लिखा है?

- कहानी के कट-आउट्स को व्यवस्थित करते हुए एक-एक करके बच्चों से दोबारा कहानी सुनाने को कहें। (बाएँ-से-दाएँ दिशा की ओर)
- भाषा के खेल कराएँ। उन्हें चिड़ियाघर, दुकानें, पुस्तक प्रदर्शनी, बच्चों से जुड़े संग्रहालय दिखाने ले जाएँ।
- बच्चों को खिलौने वाला टेलीफ़ोन, अभिनय को उत्प्रेरित करने वाली चीज़ें, तरह-तरह की कठपुतलियाँ मुहैया कराएँ ताकि बच्चों के बीच गतिशील संवाद को बढ़ावा मिले।
- ढेर सारी छोटे-बड़े समूह की गतिविधियाँ कराएँ, जैसे— तुकबंदी के खेल, अँगुलियों के खेल, संगीत और गायन आदि।
- मिले-जुले अक्षरों को छाँटना, मिट्टी से अक्षर बनाना, रेत में लिखना और अक्षरों को हाथ से लेकर उलटना-पलटना जैसे कामों के अवसर दें।

बच्चों के चारों ओर मुद्रण समृद्ध परिवेश (print rich environment) का निर्माण करें जिसमें बच्चे अपनी-अपनी रूचियों के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र अनुभव करें।

- बच्चों के काम के नमूनों का प्रदर्शन उनके दृष्टि स्तर पर करें और उनके काम के बारे में सही टिप्पणी करें।
- लिखने की मेज़ पर तरह-तरह के कागज़ों के साथ अक्षर स्टैंप पैड रखें।
- बच्चे के सामने उसकी ड्रांइग शीट पर, कार्यपत्रक या वर्कशीट या अन्य कार्यों पर ही उसका नाम लिखें।

© NCERT not to be republished

- पुस्तकें ढूँढ़ने और सँभालने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।
- ढेर सारी ध्वनि विभेदीकरण की गतिविधियाँ कराएँ, जैसे— मेरा नाम 'र' से शुरू होता है, और किसके नाम से पहले 'र'आता है?
- सोच-समझकर नए-नए विचार और उत्तर देने में बच्चों की मदद करें। उन्हें प्रश्नों के जवाब दें।
- यदि संभव हो तो साक्षरता क्षेत्र में एक कंप्यूटर रखें। आप पुराना टाइपराइटर भी रख सकते हैं।
- पुस्तकालय या साक्षरता क्षेत्र में रखी श्रवण मेज़ (Listening table) पर पुस्तकें, कैसेटस, टेपरिकॉर्डर, हेडफ़ोन और ध्वनि पैदा करने वाले वादक यंत्र रखें।
- प्रारंभिक लेखन प्रयासों के लिए आप मूविंग चॉक बोर्ड, ईंजल, ड्राई इरेज़ बोर्डस, छोटे चुंबकीय बोर्ड, स्लेट, वर्णमाला पज़ल्स का विन्यास और वर्णमाला पॉकेट चार्ट भी प्रयोग कर सकते हैं।

नोट— सामग्री की देखभाल एवं प्रदर्शन अत्यंत आवश्यक है।

ये सभी सामग्रियाँ आपको बच्चों की पहुँच के भीतर ही रखनी चाहिए। एक अच्छा प्री-स्कूल शिक्षक होने के कारण आप एक प्रिंट समृद्ध परिवेश का निर्माण करें, विकास अनुरूप गतिविधियों का आयोजन करें, आदर्श प्रस्तुत करें और साक्षरता गतिविधियों में बच्चों की पहल के प्रति प्रतिक्रिया करें। इससे भी अधिक ज़रूरी है कि आप विभिन्न गतिविधि क्षेत्रों में साक्षरता लाने के लिए बच्चों को पर्याप्त समय दें।

गतिविधि क्षेत्रों को और अधिक दिलचस्प बनाने के लिए समय-समय पर वहाँ रखी हुई वस्तुओं तथा उनका स्थान बदलते रहना चाहिए। बच्चों की रुचि को बनाए रखने के लिए उन वस्तुओं को भी बदलते रहना चाहिए।

बच्चे जब स्वतंत्र रूप से इनसे खेलते हैं, मुद्रण सामग्री का अवलोकन करते हैं, आपस में बातचीत करते हैं, बातचीत करते हुए निर्णय लेते हैं, कहानी की पुस्तकों, दृष्टि स्तर पर लगे हुए लेबल या निर्देशों को चित्रों की मदद से जब पढ़ने की शुरूआत करते हैं (pretend reading), तब शिक्षक यह सब अवलोकन करके जान पाता है कि बच्चों में किस तरह से प्रारंभिक साक्षरता आ रही है। खेल-खेल में मुद्रण सामग्री, मुक्त वार्तालाप तथा प्रिंट की तरफ बच्चों का रुझान लाकर प्रारंभिक साक्षरता की शुरूआत या यूँ कहें कि नींव रखी जाती है।

गतिविधि क्षेत्रों में उपलब्ध प्रारंभिक साक्षरता सामग्री में गहराई से संलिप्त होने से छोटे बच्चों में मुद्रण की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ विकसित होती हैं। चित्रात्मक पुस्तकों से कहानियों को दोबारा सुनाने की उनकी योग्यता बढ़ती है। पुस्तकों से प्यार बढ़ता है। छोटे बच्चों की मुद्रण में बढ़ती रुचि और जानकारी को देखकर मैं कह सकती हूँ कि गुणवत्तापूर्ण प्री-स्कूल परिवेश से बच्चों की साक्षरता में वृद्धि और विकास हो सकता है। अपनी देखभाल में रहने वाले बच्चों की साक्षारता रुचियों और योग्यताओं को आगे बढ़ाने में प्री-स्कूल शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

© NCERT not to be republished

हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस नेशनल मिशन को 2025 तक उपलब्ध कर पाएँ, इसके लिए सभी प्री-स्कूल शिक्षक तथा कक्षा 1 और 2 के शिक्षकों को मिलकर और एकजुट होकर बच्चों के साक्षर और सुनहरे भविष्य के लिए प्रारंभ से ही खेल-खेल में भाषा और प्रारंभिक साक्षरता को गतिविधियों में एकीकृत करना है। गतिविधि क्षेत्रों में के माध्यम से प्रारंभिक साक्षरता को बढ़ावा देने से अच्छा एवं रुचिकर और क्या हो सकता है कि इसके द्वारा सभी बच्चों को खेल-खेल में ही साक्षरता की तरफ रूझान हो जाए।

सभी का यह कर्तव्य है कि सभी बच्चों की भाषा विकास पर विशेष रूप से कार्य करें क्योंकि भाषा ही वह सशक्त कौशल व माध्यम है जिससे बच्चे अन्य विषयों की समझ बनाते हैं।

संदर्भ

नेशनल बुक ट्रस्ट. 2004. *कहानी कहने की कला*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.

भारत सरकार. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

सोनी, रौमिला. 2015. *थीम बेसड अर्ली चाइलडहुड एडूकेशन प्रोग्राम*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

सोनी, रौमिला और संध्या संगई. 2018. *हर बच्चा अहम—गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यवस्था शिक्षा पर एक हस्तपुस्तिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished